International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialresearchjournals.com
Volume 2; Issue 12; December 2016; Page No. 82-84

लोक–साहित्य में सीता–कथा

डॉ0 उत्तम पटेल

एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला. वलसाड, गुजरात, भारत।

सारांश

'रामायण' का प्रभाव साहित्य से अधिक जन–मानस पर पड़ा है। यही कारण है कि 'रामायण' की कथा हमारे देश के कोने कोने में प्रचलित है। किन्तु यह कथा मूल 'रामायण' कथा से भिन्न–भिन्न रूपों में प्राप्त होती है। यही कारण है कि 'रामायण' में वर्णित सीता–कथा जन–मानस में अलग रूपों में विद्यमान है। जो अलग–अलग रूपों में लोक–साहित्य में वर्णित हुई है। लोक–साहित्य में वर्णित सीता– कथा लोक–जीवन से जुड गई है और इस कारण अधिक संप्रेषणीय है।

मूल शब्दः सीता, हरण, अवधी, भीली रामायण।

प्रस्तावना

सीता–हरण और सीता–त्याग राम–कथा के विवादास्पद प्रसंग हैं। जहाँ अधिकतर भक्त रामायणकार इस प्रसंग से मुँह चुराते हैं वहीं महिलाएँ एक जातीय लगाव के साथ इसमें सम्मिलित होती हैं। यही कारण हैं कि वे सीता के प्रति के इस अन्याय के विरुद्ध एकजुट होकर राम को निष्ठुर और पापी तक कह देती हैं। इसका मूल कारण यह है कि राम–कथा की अलौकिकता धीरे–धीरे लोक–धर्मी होती गयी।

अवधी में तो एक ऐसा गीत भी मिलता है जिसके अनुसार वन–गमन के समय राम के साथ सीता–लक्ष्मण नहीं थे। यहाँ राम सीता से असंतुष्ट होकर वन–गमन करते हैं–

"सीता क लिपली ओवरिया हो त राम सेजिया डासेन हो।
सीता आवहु न हमरी सेजरिया बिपत्ति तोरें अइहैं हो।
जेकरे राम अइसन पुरूष लछिमन अइसन देवर हो,
रामा जेकरे पयते हनुमान बिपत्ति कैसे अइहैं हो।
एतनी वचन राम सुनले सुनही नाही पायन हो,
रामा घोडे पीठि भयन सवार त बन का सिधारेन हो।"[1]

भीली रामायण के अनुसार तो सीता का सुंदर बगीचा उजाडने के लिए रावण दो मुखों वाला एक मृग निर्मित करता है और बाग को उजाड़ता है तो उसे देखकर दुःखी सीता कहती है– "दो मरद हैं किन्तु झोंपडी से बाहर ही नहीं निकलते। शाम को सोते हैं, सुबह में सोते हैं और बेसमय जागते रहते हो। बैरी ने बगीचे को रेगिस्तान बना दिया है। कितने उमंग से मैंने बगीचा बनाया था। अब मन को कैसे समझाऊँ।" –यह सुनकर राम को गुस्सा आता है और वह मृग को मारने दौड़ता है और लक्ष्मण को घर पर ही रहने को कहता है। इस प्रकार राम को सीता के वचन कडुए लगने पर वह मृग के पीछे जाता है। राम का बाण मृग को लगने पर चीख पुकारते हुए वह लक्ष्मण का नाम लेता है जिसे सुनकर सीता लक्ष्मण को राम की सहायता के लिए जाने को कहती है तो वह कहता है कि भाभी, भैया ने मुझे उनके पीछे आने से मना किया है। मैं उनके पीछे जाऊँगा तो तुम्हें अकेली देखकर कोई हर सकता है। सुनकर सीता गुस्से में लक्ष्मण से कहती है– "देवर, तू मन में बुरा सोच रहा है। तेरे मन में ऐसा है कि भाई मरेगा तो भाभी तेरी हो जायेगी।"– और सीता के ऐसे वचन सुनकर लक्ष्मण भी राम के पीछे जाता है, परिणाम सीता का हरण होता है।

सीता लक्ष्मण रेखा पर लकड़ी का तख्ता रख उस पर पैर धर रावण को भिक्षा देती है कि रावण उसकी चोटी पकड़ के उठा लता है और विमान में बिठाता है।

सीता–हरण से दुःखी राम लक्ष्मण से कहता है कि जगत में ऐसी पत्नी नहीं मिलेगी। सीता चतुर, गुणियल नारी थी। तो लक्ष्मण राम से कहता है– भाई, चिंता मत कर, तेरी दूसरी शादी करेंगे और उस पत्नी का नाम सीता रखेंगे।

'रामायण' में सीता हरण की सूचना श्रीराम को गीध देता है तो एक अवधी गीत में गीत में सीता–हरण की घटना इस रूप में वर्णित है–

"सीता लखन दूनौ वन कै तपसिया सीता जे रेखवा खिंचाव।
रेखवा बाहर जिन जाइव सीता रावण रथ बइठाय।
बभना भेलस धइके आवा रवणवा भइलैं डेवढ़िया के ठाढ़।
भितरा बाटिव कि बाहेर सीता लाओ हमैं भिच्छा देहु।।
तर धइलीं मोतिया उपर धइलीं सोनवा ल्या बाभन आपन भीख।
बंधी भिच्छा न लेबै हो सीता रेखवा बाहर होइके देहु।।
एक गोड़ बाहर एक गोड़ भीतर रावण रथ बइठाय।
राम लखन जब घर का लवटे भइले डेवढ़िया के ठाढ़।.
नाहीं बाटीं हो नाहीं जुड़ पनिया नाहीं बाटीं सीता हमार।
रान्ह परोसिन तुहीं मोरी गोतिन का भेद बताव।।
बभना भेलस धइ के आवा रवणवा सीता जे रथ बइथाय।।"

अर्थात् राम–लक्ष्मण दोनों वन के तपस्वी हैं और सीता रेखा खींच दी है। सीता, रेखा के बाहर मत जाना, रावण रथ पर बैठा लेगा। ब्राह्मण वेश में रावण आता है और देहली पर खड़ा होता है। सीता तुम बाहर हो कि भीतर, लाओ मुझे भिक्षा दो। सीता ने नीचे मोती रखे और ऊपर सोना और आकर बोलीं– लो ब्राह्मण अपनी भिक्षा। रावण कहता है कि मैं बँधी हुई भिक्षा नहीं लूँगा, रेखा के बाहर आकर दो। सीता ने एक पैर बाहर रखा और दूसरा भीतर ही था कि रावण ने रथ पर बैठा लिया। राम–लक्ष्मण जब घर लौटे तो देहली पर खड़े हुए। देखते हैं, न तो कोई शीतल जल लेकर आया और न सीता ही है। पास–पड़ोस ले लोगों से वे सीता का पता

पूछते हैं। लोगों ने कहा कि ब्राह्मण वेश में रावण आया था और सीता को रथ पर बैठाकर ले गया।
तो 'रॉम–सीतमानी वारता'[2] नामक भीली रामायण में एक गिलहरी राम से कहती है कि कल किसी स्त्री को पवनपावडी में ले जाते हुए मैंने लंका के रावण को देखा था। गिलहरी की बात से आनंदित राम उसकी पीठ पर हाथ फेरता है तो उसका शरीर सुनहरा हो जाता है। तो गिलहरी उससे कहती है कि अभी तो सत्ययुग है जब कलियुग आयेगा तो लोग सोने की लालच में मुझे जीवित नहीं छोडेंगे। गिलहरी की बात सुनकर राम उसके शरीर से सोना वापस ले लेता है जिससे गिलहरी के शरीर पर सिर्फ राम की उँगलियों के निशान रह जाते हैं, जो आज भी हैं।
सीता को वापस लाने के लिए राम बंदरों को इकट्ठा करता है। हनुमान से उनकी मुलाकात होती है। बंदरों के समूहों के आने पर राम और लक्ष्मण उसकी पिटाई करते हैं तो उनके साथ–साथ हनुमान की भी पिटाई हो जाती है। हनुमान लंका जाने के लिए छलाँग लगाता है तो लंका पीछे रह जाती है और वह बहुत आगे जाकर गिरता है।
रावण सीता को लेकर लंका पहुँचता है और उसे अपने महल में रहने के लिए समझाता है तो वह कहती है– "मुझे सवा मास बगीचे में रहने दे उसके बाद मैं स्वयं तेरे महल में आ जाऊंगी।" बगीचे में सीता अपने शील की रक्षा के लिए आधे शरीर को पत्थरों से ढँक देती है।
लंका को जलाने के बाद माता अंजलि ने उसे पीछे मुड़कर देखने को मना किया था किन्तु फिर भी हनुमान पीछे जलती लंका को देखता है तो उसकी नजर जिन जिन ज्वालाओं पर पड़ती हैं, वे सोने की हो जाती है।
सीता–त्याग की कथा को भी आदिवासी प्रजा ने अपनी मौखिक परंपराओं में अपने जीवन के साथ जोड़कर उसे वर्णित किया है। इसीलिए तो धोबी की कथा से अधिक एक स्त्री की चुगली से राम सीता का त्याग करते हैं, यह बात हमें अधिक सामाजिक प्रतीत होती है। ननद और भाभी के बीच हँसी–मजाक चल रहा है। इतने में ननद कहती है कि भाभी, जो रावण तुम्हारा बैरी है उसका चित्र बनाकर दिखाओ। सीता चित्र बनाने के लिए आनाकानी करती है। उन्हें डर है कि यदि मैं चित्र बनाऊँगी और राम को पता चलेगा तो वे मुझे घर से निकाल देगें। ननद सौगंध खाकर कहती है कि तुम रावण का चित्र बनाओ, मैं भैया से नहीं बताऊँगी। राम खाना खाने बैठते हैं और बहन आकर कह देती है कि जो रावण तुम्हारा बैरी है, भाभी ने उसका चित्र बनाया है। इतना सुनते ही राम लक्ष्मण को बुलाते हैं, और आदेश देते हैं कि सीता को वन में छोड़ आओ। जैसे–

"भइया जवन रावन तोर बेरी त भौजी उरेहैं हो...
अरे अरे लछिमन भइयां बिपतिया कै साथी हो।
भैया सीता के देसवा निकारा त रवना उरेहैं हो।"[3]

सीता–त्याग का मूल कारण तो राम के गुप्तचर दुर्मुख द्वारा एक धोबी और धोबन की बात राम तक पहुँचाने की थी, किन्तु लोक–जीवन में यह घटना धीरे–धीरे परिवर्तित होती रही। जिसके परिणाम स्वरूप लोक–साहित्य में सीता–त्याग का मुख्य कारण धोबी–धोबन के बीच का झगड़ा नहीं, किन्तु भीली रामायण के अनुसार तो रावण द्वारा हरे जाने से कौशल्या द्वारा सीता को कलंकित मानना है–
राम–सीता वनवास से अयोध्या आने वाले हैं, जानकर कौशल्या गाड़ीवान से गाड़ी सजाने को कहती है क्योंकि बहुत दिनों के बाद सीता आ रही है। सीता भी कौशल्या से मिलने के लिए उत्सुक है। जैसे ही वह विमान से नीचे उतरती है कौशल्या भी बैलगाड़ी से नीचे उतरती है। सीता उसके सामने जाकर पैरों पड़ती है तो सास मुँह फेर लेती है। सीता द्वारा यह पूछने पर कि मेरी ऐसी तो क्या गलती हो गई कि तुमने मुँह फेर लिया। तो वह कहती है– "रांड, तुं मुझसे क्या उत्तर चाहती है। मुझसे भीख माँगना छोड़ और तेरे रावण पति की बात कर। लोग कहते हैं उसके दस सिर और बीस हाथ हैं। तूने तो उसे सामने से देखा है, उसकी बात कर।"
सीता कौशल्या को समझाना चाहती है किन्तु वह उसकी बातें नहीं मानती और कहती है कि तूने ही राम के पीछे लक्ष्मण को भेजा था। तुझे रावण के साथ जाना था न इसलिए तूने लक्ष्मण को ताने मारकर राम के पीछे भेजा था।
सास–बहू के झगडे को दूर से सुन रहे राम–लक्ष्मण पास आते हैं तो रोते हुए कौशल्या राम से कहती है– "बेटा, तू उसे वन में ले जाकर मार कर उसकी आँखें ले आयेगा, तब मुझे चौन होगा।"
सीता भी कौशल्या से कहती है कि 'मैं तो गुणवंती नारी हूँ। मुझे तो तेरा बेटा ही पहचानता है। तेरा मन मैला हो गया है। तू मुझे सचमुच में नहीं पहचान सकी है।" किन्तु कौशल्या सीता की बातें नहीं सुनती और राम से कहती है कि "बेटा, देर हो रही है। तेरी रांड तो बहुत बोलती है। उसे जल्दी से वन में ले जा और आँखें लेकर तुरंत आ जा। जहाँ तक उसकी आँखों को नहीं मसलूँगी, मुझे चौन नहीं होगा।" राम लक्ष्मण से सीता को वन में छोड़ने को कहता है। वह सीता से भी दुःखी होकर कहता है कि भगवान ने ही हमारी जोडी बनायी और फिर से तुझे वनवास दिया। उसकी कृपा होगी तो हमारा फिर से मिलन होगा।
लक्ष्मण सीता के लिए बैलगाडी तैयार करता है। राम उसे 'वनफल' देता है और कहता है कि इसे खाने से तुझे मेरा सहारा मिलेगा। सीता राम से विदा लेती है। लक्ष्मण रोते हुए बैल गाड़ी हाँकता है तब कौशल्या फिर से कहती है– "रांड, नीच कुल की थी। मैं यहाँ से निकाल कर ही रही। लक्ष्मण, उसे लेकर जा तो रहा है किन्तु अपने हाथों उसे मार कर आँखें लेकर आना। उसे मेरे हाथों जबतक मसलूँगी नहीं, तब तक मेरी रीस नहीं बुझेगी।" कदलीवन में पहुँचने पर सीता को प्यास लगती है तो लक्ष्मण पानी लाने जाता है। रात हो जाती है। किन्तु पानी नहीं मिलता। सुबह होने पर पहाड़ पर से पानी मिलता है। उसे लेकर लक्ष्मण को आते देखकर सीता सोने का नाटक करती है क्योंकि वह सोचती है कि अगर लक्ष्मण जाना चाहेगा तो मैं खुली आँखों उसे कैसे विदा करूँगी। अतः आँखें बंद कर वह पड़ी रहती है। लक्ष्मण भाभी के सिर के पास पानी का दोना रखकर अयोध्या चल पड़ता है।
एक अवधी गीत के अनुसार वन में सीता को प्यास लगती है। लक्ष्मण पानी लाने जाते हैं। लौटते हैं तो देखते हैं कि सीता थककर सो गयी हैं। स्थिति अनुकूल देख लक्ष्मण वहीं वृक्ष पर पानी का दोना लटका कर वापस अयोध्या लौट चले आते हैं।[4]
एक दूसरे अवधी गीत में सीता को प्यास लगने पर लक्ष्मण उनसे ही अपने सतीत्व के प्रमाण स्वरूप जल उत्पन्न करने को कहते हैं। सीता एक ताल उत्पन्न करती हैं जिसमें सफेद कमल खिले हैं। सीता प्यास बुझाकर सो जाती है और लक्ष्मण फिर चले जाते हैं।
रास्ते में दौड़ रहे एक हिरण को मारकर वह उसकी आँखें निकाल लेता है। अयोध्या पहुँचने पर कौशल्या द्वारा माँगने पर वह हिरण की आँखें देता है तो वह हाथों मसलकर खटिया के पैर के नीचे रखकर कुचलती है।

निष्कर्ष

संक्षेप में, 'रामायण' में वर्णित सीता–कथा हमारे देश के भिन्न–भिन्न प्रांतों में अलग–अलग रूपों में प्राप्त होती है। चाहे वह अवधी हो या गुजरात की भीली या कुंकणा बोली। एक बात स्पष्ट है कि राजमहल की यह कथा लोक–साहित्य में अलग अलग रूपों में अभिव्यक्त होती रही है। जो महल से विलग होकर लोक से जुड़

गई है। गीतों या कथों में वर्णित सीता–कथा सामान्य–जन के हृदय की अभिव्यक्ति है। सीता–त्याग की कथा को आदिवासी प्रजा ने अपनी मौखिक परंपराओं में अपने जीवन के साथ जोड़कर उसे वर्णित किया है। इसीलिए तो धोबी की कथा से अधिक एक स्त्री की चुगली से राम सीता का त्याग करते हैं, यह बात हमें अधिक सामाजिक प्रतीत होती है।

संदर्भ ग्रर्थ

1. सिंह, कमला सिंह,अवधी के लोकरंग, 2003, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ. 5।
2. पटेल, भगवानदास (संपा.),आदिजाति महाकाव्यो (गुजराती), 2009, माहिती कमिश्नर, गुजरात राज्य, गाँधीनगर, पृ.82–83।
3. त्रिपाठी, रामनरेश, ग्राम साहित्य, 1951, आत्माराम एण्ड सन्ज, दिल्ली, पृ. 208।
4. त्रिपाठी, रामनरेश, ग्राम साहित्य, 1951, आत्माराम एण्ड सन्ज, दिल्ली पृ. 127।